

Padma Shri



SHRI DARSHANAM MOGULAIAH

Shri Darshanam Mogulaiah is an artist who sings folk and heroic songs by playing the Kinnera, a unique instrument. The instrument (Kinnera) is one and only the oldest one which has been surviving for the last 500 years. It is made of bamboo, round guards, horns, honey, wax, mirror, strings and 12 steps. He comes from a poor migrated family. He looks very simple but attracts everyone's attention with his modulated voice, historical knowledge and unparalleled body language. Telangana Government recognized his skills and introduced him to the world.

2. Born on 1st January, 1949 at Ausalikunta village, Lingal Mandal, Mahabubnagar District in Telangana. Shri Mogulaiah says, "I can live by begging but I do not leave my Kinnera." He might not have studied the academic books but he can tell many kings' and emperors' stories which are not written. He did not complete his schooling because of his poverty. His poverty and problems troubled him like anything but he has not stopped the singing by using his unique Kinnera. Hence people are calling him as Kinnera Mogulaiah.

3. Shri Mogulaiah's grandparents played 7 steps Kinnera, his father used 9 steps Kinnera. His father used to tell that it is impossible to design a Kinnera with more than 9 steps. But he designed a 12 steps Kinnera which made him popular playback singer. He started playing the Kinnera at the age of 9 and became skillful in using it at the age of 18. The Government of Telangana gives rupees 10,000/month as a pension to him.

4. Shri Mogulaiah migrated to Hyderabad, the Capital City of Telangana, which is 200 kms away from his home village for earning livelihood. But the Covid-19 pandemic spoiled his plans to feed his family by working as a daily labour. At that situation, the Cine Hero Pavan Kalyan saw him, recognized his skills and gave a chance as a playback singer in his upcoming movie Bheemla Naik. This unexpected opportunity made him a real hero. His life is a lesson in 8th standard book of Telangana State, it is motivating the students as, "The Sky is limit." He has been contributing his services by giving awareness programs in various sectors. There is a Pillar with his name at Begumpet Metro Station. The State Government has drawn his photo on that pillar.

5. Shri Mogulaiah has been appreciated, honoured and awarded by many organizations like Potti Sreeramulu Telugu University, Shilparamam, Ministry of Culture Government of India South Zone Culture Centre - Thanjavur, Vritthi Puranas Research Centre - Osmania University, Infosys Foundation and so on. The Chief Minister of Telangana awarded him as one of the best artists on the first Formation Day of Telangana State, with Ugadi Puraskar and announced a grant of 1 crore rupees to build a house. The Governor of Maharashtra Shri Vidhyasagar Rao also honoured him.

पद्म श्री



श्री दर्शनम मोगुलय्या

श्री दर्शनम मोगुलय्या एक ऐसे कलाकार हैं जो किन्नेरा नामक अनोखा वाद्य यंत्र बजाकर लोक और वीर गीत गाते हैं। यह वाद्ययंत्र (किन्नेरा) अकेला ऐसा सबसे पुराना वाद्ययंत्र है जो पिछले 500 वर्षों से बचा हुआ है। यह बांस, तुंबे, सींग, शहद, मोम, दर्पण, तार और 12 खूंटियों से बनता है। उनका परिवार एक गरीब विस्थापित परिवार है। वे दिखने में बेहद साधारण हैं लेकिन अपनी सुरीली आवाज, ऐतिहासिक ज्ञान और बेजोड़ दैहिक भाषा से सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लेते हैं। तेलंगाना सरकार ने उनके कौशल को पहचाना और उन्हें दुनिया से रु-ब-रु किया।

2. 1 जनवरी, 1949 को औसालिकुंटा गांव, लिंगल मंडल, महबूबनगर जिला, तेलंगाना में जन्में श्री मोगुलय्या कहते हैं, “मैं भीख मांगकर जिंदा रह सकता हूं लेकिन मैं अपना किन्नेरा नहीं छोड़ सकता।” भले ही उन्हें किताबी ज्ञान न हो लेकिन वे कई ऐसे राजाओं और सम्राटों की कहानियाँ मुंहजबानी सुना सकते हैं जो कभी लिखी ही नहीं गईं। गरीबी के कारण वे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं कर पाए। उनकी गरीबी और समस्याओं ने उन्हें चाहे जितना परेशान किया हो लेकिन उन्होंने अपने विलक्षण वाद्ययंत्र किन्नेरा को बजाकर गायन की परंपरा को कभी रुकने नहीं दिया। इसलिए लोग उन्हें किन्नेरा मोगुलैय्या कहकर बुलाते हैं।

3. श्री मोगुलय्या के दादा-दादी 7 खूंटी वाले किन्नेरा बजाते थे। उनके पिता ने 9 खूंटी वाले किन्नेरा का इस्तेमाल किया। उनके पिता बताया करते थे कि 9 से अधिक खूंटियों वाले किन्नेरा को तैयार करना संभव ही नहीं है। लेकिन उन्होंने 12 खूंटी वाला किन्नेरा तैयार किया जिसने उन्हें लोकप्रिय पार्श्वगायक बना दिया। उन्होंने 9 साल की उम्र में किन्नेरा बजाना शुरू किया और 18 साल की उम्र में इसका इस्तेमाल करने में निपुण हो गए। तेलंगाना सरकार उन्हें 10,000 रुपये प्रति माह पेंशन के रूप में प्रदान करती है।

4. श्री मोगुलय्या तेलंगाना की राजधानी, हैदराबाद में बस गए, जो आजीविका कमाने के लिए उनके पैतृक गांव से 200 किमी दूर है। लेकिन कोविड -19 महामारी ने दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करके अपने परिवार का भरण-पोषण करने की उनकी योजना को धराशायी कर दिया। इसी दौरान एक दिन सिने हीरो पवन कल्याण ने उन्हें देखा, उनके कौशल को पहचाना और अपनी आने वाली फिल्म भीमला नाइक में एक पार्श्वगायक के रूप में मौका दिया। इस अप्रत्याशित अवसर ने उन्हें एक वास्तविक नायक बना दिया। उनके जीवन चरित्र को तेलंगाना राज्य की आठवीं कक्षा की किताब में एक पाठ के रूप में शामिल किया गया है। यह छात्रों को इस रूप में प्रेरित कर रहा है कि “मानव की क्षमताएं असीम हैं।” वे विभिन्न क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रमों के द्वारा अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। बेगमपेट मेट्रो स्टेशन पर उनके नाम का एक स्तंभ है। उस स्तंभ पर राज्य सरकार ने उनका चित्र बनाया है।

5. श्री मोगुलय्या को कई अलग-अलग संगठनों जैसे कि पोर्टी श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय, शिल्पाराम, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार दक्षिण क्षेत्र संस्कृति केंद्र – तंजावुर वृत्ति पुराण रिसर्च सेंटर – उस्मानिया यूनिवर्सिटी, इंफोसिस फाउंडेशन आदि, द्वारा सराहा गया है, सम्मानित किया गया है और पुरस्कृत किया गया है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने उन्हें तेलंगाना राज्य के प्रथम स्थापना दिवस के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से एक के रूप में उगादि पुरस्कार से सम्मानित किया और घर बनाने के लिए 1 करोड़ रुपये देने की घोषणा की। महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री विद्यासागर राव ने भी उन्हें सम्मानित किया।